श्रीः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

श्रीमान् वेङ्कटनाथार्यः कवितार्किककेसरी।
वेदान्ताचार्यवर्यो मे सन्निधत्तां सदा हृदि॥

श्री नृसिंह भारति स्वामिना विरचितं

॥ श्रीवेङ्कटेश करावलम्ब स्तोत्रम् ॥

This document has been prepared by*

Sunder Kidambi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness *śrīmad āṇḍavan* of *śrīraṅgam*

*This was typeset using LaTeX and the **skt** font.

श्रीः

॥ श्रीवेङ्कटेश करावलम्ब स्तोत्रम् ॥

श्री शेषशैल सुनिकेतन दिव्यमूर्ते
नारायणाच्युत हरे नळिनायताक्ष।
लीलाकटाक्ष परिरक्षित सर्वलोक
श्री वेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम्॥ १ ॥

ब्रह्मादिवन्दित पदाम्बुज शङ्खपाणे
श्रीमत्सुदर्शन सुशोभित दिव्यहस्त।
कारुण्यसागर शरण्य सुपुण्यमूर्ते
श्री वेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम्॥ २ ॥

वेदान्त वेद्य भवसागर कर्णधार
श्रीपद्मनाभ कमलार्चितपादपद्म।
लोकैकपावन परात्पर पापहारिन्
श्री वेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम्॥ ३ ॥

लक्ष्मीपते निगमलक्ष्य निजस्वरूप
कामादिदोष परिहारक बोधदायिन्।
दैत्यादिमर्दन जनार्दन वासुदेव
श्री वेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम्॥ ४ ॥

तापत्रयं हर विभो रभसा मुरारे
संरक्ष मां करुणया सरसीरुहाक्ष।
मच्छिष्य इत्यनुदिनं परिरक्ष विष्णो
श्री वेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम्॥ ५ ॥

श्रीजातरूप नवरत्न लसत्किरीट
कस्तूरिका तिलकशोभि ललाटदेश।
राकेन्दुबिम्ब वदनाम्बुज वारिजाक्ष
श्री वेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम्॥ ६ ॥

वन्दारुलोक वरदान वचोविलास
    रत्नाढ्यहार परिशोभित कम्बुकण्ठ।
केयूररत्न सुविभासि दिगन्तराळ
    श्री वेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम्॥ ७ ॥

दिव्याङ्गदाञ्चित भुजद्वय मङ्गळात्मन्
    केयूरभूषण सुशोभित दीर्घबाहो।
नागेन्द्रकङ्कण करद्वय कामदायिन्
    श्री वेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम्॥ ८ ॥

स्वामिन् जगद्धरण वारिधिमध्यमग्नं
    मामुद्धराद्य कृपया करुणापयोधे।
लक्ष्मीञ्च देहि मम धर्म समृद्धिहेतुं
    श्री वेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम्॥ ९ ॥

दिव्याङ्गराग परिचर्चित कोमळाङ्ग
    पीताम्बरावृततनो तरुणार्क दीप्ते।
सत्काञ्च नाभ परिधान सुपट्टबन्ध
    श्री वेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम्॥ १० ॥

रत्नाढ्यदाम सुनिबद्ध कटिप्रदेश
    माणिक्यदर्पण सुसन्निभ जानुदेश।
जङ्घाद्वयेन परिमोहित सर्वलोक
    श्री वेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम्॥ ११ ॥

लोकैकपावन सरित्परिशोभिताङ्घ्रे
    त्वत्पाद दर्शन दिने च ममाघमीश।
हार्दं तमश्च सकलं लयमाप भूमन्
    श्री वेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम्॥ १२ ॥

कामादिवैरि निवहोऽच्युत मे प्रयातः
    दारिद्र्यमप्यपगतं सकलं दयाळो।

दीनञ्च मां समवलोक्य दयार्द्र दृष्ट्या
    श्री वेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम्॥ १३॥

श्री वेङ्कटेश पदपङ्कज षट्पदेन
    श्रीमन्नृसिंहयतिना रचितं जगत्याम्।
एतत्पठन्तिमनुजाः पुरुषोत्तमस्य
    ते प्राप्नुवन्ति परमां पदवीं मुरारेः॥ १४॥

॥ इति श्रीवेङ्कटेश करावलम्ब स्तोत्रम् सम्पूर्णम्॥